समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 25 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

विचारधारा तो राष्ट्रीयता–देशप्रेम जगाने वाली ही है

कॉग्रेश उपाध्यक्ष राहुल गॉधी ने अभी हाल ही में नरेन्द मोदी सरकार पर एक नया आरोप लगाया है कि सरकार एक विशेष विचार धारा को लोगों पर थोप रही है। इस थोथे आरोप में राहुल जी और कॉग्रेस के उपाध्यक्ष पद पर आसीन व्यक्ति की उथली समझ ही सामने आती है। यही कारण है कि उनके आरोप भारतीय जनता के न तो गले उतर रहे हैं न ही मन–मस्तिष्क को प्रभावित कर पर रहे है। सिर्फ सत्ता पाने और उसमें भी असफलता हाथ लगने की छटपटाहट झलकती है।

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन मण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।।

यही सम्पूर्ण भारत का चित्र है। प्रातः स्मरण में जिन महापुरूषो का पुण्य स्मरण किया जाता है, वे भारत के किसी प्रान्त विशेष के नही अपितु संपूर्ण भारत के है। हमारे देश के प्राचीन नीतिकार एवं शास्त्रकार भी संपूर्ण भारत की एकता का अनुभव करके शास्त्रों की रचना करते रहे हैं उनका अनूभूति–क्षेत्र भौतिक जगत् तक ही सीमित नही रहा। जिन –जिन संदर्भो को लेकर राहुल जी आरोपों की बौछार लगाते आ रहे हैं एक प्रश्न उनसे कोई पूछ सकता है कि भारत माता की जय क्यों नही बोलना चाहिए ? वे सेकुलर खेमें द्वारा फैलायी गई भ्रान्तियों एवं दुष्प्रचार से प्रभावित हैं और बिना गंभीर चिन्तन मनन किये आरोप लगाते रहते है। चाहे वंदे मातरम् का विरोध हो, चाहे 'भारतमाता की जय का । यह अलगाववादी भावना है। जब देश के अंदर ही कुछ तत्व देश को तोड़ने की सरेआम धमकी देते हो, देश विरोधी नारे लगाते हों–ऐसे समय राहुल जी का गुस्सा ओंठो से बाहर क्यों नही आता ? इसका तो सीधा तात्पर्य यही है कि वे भी ऐसे तत्वों को प्रोत्साहन देना चाहते है। भारत की सर्वमान्य प्राचीन परम्परा तो यही रही है कि अनेकता में एकता खान–पान, रहन–सहन, भाषा, वेशभूषा, मजहब भले ही भिन्न–भिन्न हो पर मन सबका एक होना चाहिये। जहॉ तक संस्कृति का सवाल है तो भारतीयों की संस्कृति एक है। जहॉ पूजा उपासना पद्धति अलग–अलग हो सकती हैं। जहॉ तक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सवाल है–वह राष्ट्रहितैषी एवं राष्ट्रभक्तों की संस्था है जिसकी आराध्य भारत माता है और उसमें निवास कर रहे आवाल वृद्ध,नर–नारी श्रद्धा के केन्द्र में हैं वह एक गैर राजनीतिक संगठन है। जिसकी जड़े सनातन हिन्दूधर्म से जुड़ी हुयी है। यहॉ जाति–पॉति का भेदभाव नही है। भय–घृणा का कोई स्थान नही है। प्रातः होते ही राष्ट्रपिता सहित देश के महान सपूतों को नमन किया जाता है। संघ की प्रत्येक शाखा मे किसी व्यक्ति को नहीं वरन् भगवा ध्वज को गुरू का प्रतीक मानकर श्रद्धा पूर्वक प्रणाम किया जाता है। वर्तमान समय में संघ द्वारा देशभर में 15 लाख से अधिक सेवा प्रकल्प (सेवाकार्य)संचालित हैं जिसमें हजारों नही लाखों–करोड़ों स्वयंसेवक एवं अन्य सहयोगी उन सेवा प्रकल्पों को सफल बनाने में प्राण–पण से जुटे हुये हैं। ये सेवा प्रकल्प समाज स्तर के उन्नयन के लिये हैं। वर्ष भर में करीब तीस हजार नेत्रदान शिविर संघ द्वारा आयोजित किये जाते हैं। पिड़ले क्षेत्रों में, मलीन वस्तियों में, शहरी क्षेत्रो में, दिब्यॉग एवं पिछड़े मानसिक स्तर के बच्चों के लिये विशेष प्रयास भी किये जा रहे है। अन्य संस्थाये भी ऐसे प्रशंसनीय सेवाकार्य कर रही है लेकिन उनमें भी संघ से किसी प्रकार की प्रति द्वन्दिता का भाव नही है। संघ के इन प्रकल्पों को जिन महानुभावों ने निकट से देखा है वे भूरिन्भूरि प्रंशसा करने से चूके नहीं है। अभावों एवं विविध प्रकार की कठिनाईयों से जूझते हुये अपने जन्मकाल सन् 1925 से लेकर अबतक इन्ही सेवाकार्यो में संलग्न रहकर जनजन का अपूर्व उत्साह के साथ सहयोग प्राप्त करते हुये संघ एक विशाल वट वृक्ष बन चुका है। वनवसी कल्याण आश्रम वनवासी क्षेत्रों में चमत्कारिक कार्यो को अंजाम दे रहा है। विवेकानंद केन्द्र के माध्यम से युवाओं में गहरी पैठ बन चुकी है। सेवाभारती के माध्यम से वंचित समाज को विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से मुख्य धारा में लाने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया जाकर सर्वत्र सराहना प्राप्त हो रही है। वही विद्याभारतीय का शिक्षा क्षेत्र में और महिलाओं के बीच में राष्ट्रसेविका समिति की मागीदारी को नजर अंदाज कर पाना आज संभव ही नही है। इसी प्रकार संस्कार भारती, आरोग्य भारतीय क्रीड़ा भारती, सक्षम (द्विव्यॉगों के लिये कार्यरत संस्था) अधिवक्ता परिषद् अ.भा. विद्यार्थी परिषद, मजदूर संघ, ग्राहक पंचायत, विज्ञान भारती और भारतीय शिक्षक मंडल जैसे अनेकानेक आनुषांगिक संगठन अपने सेवा कार्यो के माध्यम से नये भारत की संरचना में अपना योगदान दे रहे हैं। संघ द्वारा गत 90 वर्षो में अपने स्वयं सेवकों की कर्मठता के आधार पर जो जन–जन मे विश्वास अर्जित किया है उसकी सफलता से लोगों की ऑखे चौधिया जाना स्वाभाविक है। क्या इन सेवा कार्यो की बराबरी करने की क्षमता जुटापाना किसी संस्था के लिये एक बडी चुनौती नहीं है ? कॉग्रेसी, वामपंथी और सेकुलर खेमा तो महात्मा गॉधी की हत्या के झूठे तोता रटन्त में ही लगा रहा जिसके कारण कॉग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सीताराम केशरी सहित अनेकों को माफी भी मॉगना पड़ी थी। इसके बाद भी जर्मनी के गोयबल्स के अनुयागियों को आरोप लगाते शर्म भी महसूस नही होती–इतनी बेशर्मी ? इतिहास से सबक न लेनेके कारण आज कॉग्रेस अपनी दुरावस्था के चरम पर जा पहुची है। सत्ता की राजनीति के लोभ–लालच के चलते संघ के खिलाफ विष–वमन का घिनौना कृत्य न जाने कितनी बार किन–किन ने नही किया ? संघ पर प्रतिबन्ध लगाने के घृणित प्रयास किये गये, संघ के स्वयंसेवकों को जेलों मे ढूँसा गया, अमानवीय अत्याचार किये गये । इन सबके बावजूद संघ के वैचारिक पक्ष को लेकर कॉग्रेस के नेता अपनी सहमति भी दिखाते रहे है। संघ ने हमेशा इन सब दुष्कृत्यों के दौरान प्रताड़ना सही भी लेकिन लोक तंत्र पर विश्वास बनाये रखा। संघ शक्ति के सहारे ही आयात काल समाप्त करने इंदिरा जी को विवश होना पड़ा, लोकतंत्र की बहाली हो सकी और जनता सरकार बनी सम्प्रदायिकता के आरोप पहले भी लगते रहे आज भी फैशन के बतौर लगाये जा रहे हैं लेकिन आरोप लगाने वाले नेता मुस्लिम सम्प्रदायिक जलसों–कार्यक्रमों में सम्मोहित होते से सम्मान और गौरव का अनुभव कर मनमुदित क्यों होते रहते है ? इसका रहस्य क्या हैं ? अतः निष्कर्ष यही है कि भयभीत वे है जो संघ के कारण अपनी जमीन खिसकती अनुभव कर रहे है। उन्हे सत्ता सुख से वंचित होना पड़ा है और जिन्हे भविष्य में भी सत्ता सुख पाने की आशा शेष नही रह गयी है। संघ तो सेवा के लिये एक विस्तृत क्षेत्र उपलब्ध कराने वाला संगठन है। साथ ही सेवा

डॉ. किशन कछवाहा

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

संस्कृत से खुलते हैं नूतन द्वार

समाज में एक भ्रम फैला हुआ है कि संस्कृत पढ़कर छात्र अर्थार्जन नही कर सकता। उसे केवल शिक्षक बनना पड़ता है या पुरोहित। ऐसी धारणा रखने वालों से मेरा प्रश्न है कि बीए, बी.कॉम बीएससी करने वालों के लिये कौन–सी नौकरी बाट जोह रही है ? हमारे देश में स्नातक को आधरभूत उपाधि माना जाता है। इसके बाद विद्यार्थी कोई भी प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर नौकरी पा सकते है। संस्कृत से स्नातक लोगो के लिये किस प्रतियोगी परीक्षा के द्वार बंद है ? उत्तर आयेगा किसी का नही। स्नातक के बाद अधिकतर छात्र प्रबंधन शास्त्र (एमबीए) पढ़ते है। क्या वे संस्कृत से प्रबंधन शास्त्र की पढ़ाई नही कर सकते ? संस्कृत के विद्यार्थी यूपीएससी परीक्षा में सफल होते है। चोटीपुरा गुरूकुल की कन्या यूपीएससी में तृतीय स्थान पर आई। लखनऊ के एक संस्कृत विद्वान के परिवार का युवक इस वर्ष आईएएस बना। मेरा अनुभव यह है कि बहूत से छात्र यूपीएससी में संस्कृत लेते है। आई आई टी या अन्य अभियंत्रण शास्त्र के विद्यार्थी भी आईएएस बनने के लिये संस्कृत चुनते हैं और संभाषण सीखने के लिये संस्कृत भारती के पास आते है। आश्चर्य तब हुआ जब एक मुस्लिम बी.टेक छात्रा संस्कृत सीखने के लिये संस्कृत भारती की ओर से संचालित संवादशाला में पहुँची। वहां 14 दिन का आवासीय शिविर होता है। वह यूपीएससी परीक्षा देने वाली थी। विश्वभर में योग का प्रचलन बढ़ रहा है, यह सर्वविदित है। किन्तु अधिकांश लोगों को केवल आसन और प्राणायाम का कुछ हिस्सा ज्ञात है। अब कुछ लोग (विशेषकर विदेशी) अष्टांग योग की ओर उन्मुख होने लगे है। उन्हे पढायेगा कौन ? जो योग दर्शन का ज्ञाता है, वही न। क्या विश्व की जिज्ञासा शान्त करने के लिये हमारे पास पर्याप्त शिक्षक है। इस वर्ष विदेश मंत्रालय द्वारा पहला प्रयास किया गया। योग दिवस के निमित्त भारत से योग दर्शन के कुछ विद्वानों को विदेशों में भेजा गया। यह मांग बढ़ने वाली है। विश्व के कुछ ही अंग्रजी समझते हैं। शेष अपनी–अपनी भाषा में पढ़ते है, जैसे जर्मन,फ्रेन्च, रशियन, जापानी, चीनी, हिब्रू, इत्यादि। इसलिये इन देशों में योग दर्शन पढाना है तो पहले संस्कृत पढ़ानी होगी। कारण अंग्रेजी से काम नही चलेगा। यह संभव नही कि दार्शनिक विश्व की सभी भाषाएं पढ़े। वैसे भी योगशास्त्र, भाष्य ग्रन्थ, टीका ग्रन्थ इत्यादि पढ़ने के लिये संस्कृत जानना जरूरी है। यही हाल आयुर्वेद का है। विदेशों में औषधियों की मांग लगातार बढ़ रही है। कुछ समय पश्चात आयुर्वेद पढ़ने के लिये विदेशी छात्र प्रवृत होंगे। तब आयुर्वेद के ग्रन्थों को पढ़ने के लिये संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। विदेशियों की जैसी जिज्ञासा प्रवृति है, वे अवश्य संस्कृत पढ़ेंगे। तब पढाने वाले शिक्षकों की वैश्विक मांग होगी। जैसा कि मैने पूर्व में लिखा है, संस्कृत को अंग्रेजी माध्यम से नही सिखाया जा सकता है। अतः अनिवार्य रूप से संस्कृत माध्यम में पढ़ाना पड़ेगा। क्या भारत के शिक्षक इसके लिये तैयार हैं ? यह मेरी कल्पना का विलास भर नही है। एक वर्ष पूर्व संस्कृत भारती के पास एक स्पेनिश वास्तुविद् आई। उसे भारतीय वास्तुशिल्प पढ़ना था। उसे यह समझ में आ गया कि भारतीय वास्तुशिल्प पढ़ने के लिये संस्कृत अनिवार्य है। उसने संस्कृत भारती के बेंगलुरू कार्यलय में रह कर संस्कृत सीखी, फिर वास्तुशिल्प पर अपना प्रबंध लिखा। यह हमारा दुर्भाग्य है कि भारतीय अपनी विद्या सीखने के लिये तत्पर नही हैं। मौजूदा केन्द्र सरकार ने योजनापूर्वक व्यावसायिक महाविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में संस्कृत लाने का प्रयास किया। करीब दो सौ महाविद्यालय जहां संस्कृत पाठ्यक्रम का हिस्सा नही, वहां सरकार ने प्राध्यापकों को भेजा है। इच्छुक छात्र एवं प्राध्यापक संस्कृत की कक्षाओं में बैठते है। विद्यालयी शिक्षा में सर्वाधिक शिक्षक अंग्रेजी के है। संस्कृत का स्थान इसके बाद आता है। उच्च शिक्षा में संस्कृत प्राध्यापकों की संख्या सर्वाधिक है, क्योकि सामान्य महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संस्कृत की पढ़ाई होती है। इसके अलावा, 15 संस्कृत विश्वविद्यालय है। इतने विश्वविद्यालय किसी विषय के नही है। हर संस्कृत विश्वविद्यालय में कम से कम साहित्य, व्याकरण , दर्शन, वेद, ज्योतिष एवं शिक्षाशास्त्रे जैसे विभाग होते हैं। हर विभाग में आचार्य, सहआचार्य, सहायक आचार्य पद सृजित किये जाते हैं, जिसमे महाविद्यालयी प्राध्यापकों की संख्या बढ़ जाती है। जहां तक पुरोहितों का प्रश्न है, वे 8 वर्ष की अवस्था में गुरूकुल में दाखिला लेते हैं और 6 से 12 वर्ष तक वेदाध्ययन कर पौरोहित करने लगते हैं। समाज में पुरोहितों की आवश्यकता अधिक होने के कारण वैदिकों को 14 वे वर्ष से ही धन दक्षिणा मिलने लगती है। देश में ऐसी कौनसी पढ़ाई है जो उम्र के 14वे वर्ष से धन देने लगे ? इसके अलावा उन्हे भरपूर सम्मान मिलता है। ज्योतिषी भी बिना किसी पूंजी के व्यवसाय आरंभ करता है और पर्याप्त धन कमाता है। अतः संस्कृत या वेद के विद्यार्थी अन्य विषयों की अपेक्षा कम बेरोजगार हैं संस्कृत को आत्मसात करने से शुद्ध लिखना या बोलना आयेगा। इसलिये संस्कृत के अध्ययन से अर्थाजन कैसे होगा, लोग इस चिंता को त्यागें और अधिक संख्या में संस्कृत सीखे।

राजनैतिक संरक्षण में हो रही केरल में हत्याएं

पिछले दिनों हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, हिमाचल में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्रीनिवास उपस्थित थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि केरल में लगातार हो रही राजनीतिक हिंसा से लोकतंत्र की हत्या हो रही है। केरल के वामपंथी अब तक 300 से अधिक लोगों की बलि ले चुके हैं और यह सारा खेल राजनीतिक संरक्षण में हो रहा है। हाल ही में संघ के स्वयंसेवक राजेश की हत्या का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कम्युनिस्ट गुंडों ने राजेश की नृशंसतापूर्वक हत्या की ही। इस हत्या ने मानवीय संवेदनाओं को तार–तार कर दिया। वामपंथी विचारधारा रक्तंरजित इतिहास रच रही है। ऐसे में आने वाली पीढ़ी को इनकी हिंसावादी विचारधारा को पहचानने की जरूरत है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री आई.डी. भंडारी ने कहा कि वामपंथी केरल में ही पहली बार सत्ता में आये और उसके बाद से संघ विचारधारा से उनके हिंसात्मक मतभेद हो गए। विचारधारा से मतभेद होना लोकतंत्र में सामान्य बात है, पर दूसरी विचारधारा को टिकने ही नहीं देना लोकतांत्रिक मूल्यों के बिल्कुल विपरीत है। उन्होंने कहा कि वामपंथी कन्नूर मॉडल को आगे बढ़ाने का काम कर रहें हैं जो किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए सही नही है।

अर्थनीति का भारतीयकरण एवं आर्थिक लोकतंत्र

(25 सितम्बर के लिये विशेष लेख)

भौतिक विकास किसी भी राष्ट्र की अर्थनीति का स्वाभाविक लक्ष्य होता है। दीनदयाल जी विकास के पाश्चात्य माडल को मानवीय एकात्मता के लिये अहितकर मानते थे। अतः उन्होने अर्थनीति के भारतीयकरण का आह्वान किया। देश से दरिद्रय दूर होना चाहिये। इसमे दो मत नही किन्तु प्रश्न यह है कि यह गरीबी कैसे दूर हो ? हम अमेरिका के मार्ग पर चले या रूस के मार्ग को अपनावें अथवा यूरोपीय देशों का अनुकरण करे ? हमे इस बात को समझना होगा कि इन देशों की अर्थव्यवस्था में अन्य कितने भी भेद क्यों न हो, इनमे एक मौलिक साम्य है। सभी ने मशीनों को ही आर्थिक प्रगति का साधन माना है। मशीन का सर्वप्रधान गुण है मनुष्यों द्वारा अधिकतम उत्पाद करवाना। परिणामतः इन देशों को स्वदेश में बढ़ते हुये उत्पादन को बेचने के लिये विदेशों में बाजार ढूँढने पड़े। साम्राज्यवाद उपनिवेशवाद इसी का स्वाभाविक परिणाम बना। इस राज्य विस्तार का स्वरूप चाहे भिन्न – भिन्न हो किन्तु क्या रूस को, क्या अमेरिका को क्या इंग्लैण्ड को सभी को इस मार्ग का अवलम्बन करना पड़ा। हमे स्वीकार करना होगा कि भारत की आर्थिक प्रगति का रास्ता मशीन का रास्ता नही है। कुटीर उद्योगों को भारतीय अर्थनीति का आधार मानकर विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का विकास करने से ही देश की आर्थिक प्रगति संभव है। दीनदयाल जी अंत्योदय के लिये लोकतंत्र को आवश्यक मानते थे। लोकतंत्र राजनीति में अंतिम व्यक्ति की

सहभागिता का आश्वासन देता है। दीनदयाल जी राजनैतिक लोकतंत्र की सार्थकता के लिये आर्थिक लोकतंत्र को भी परमआवश्यक मानते थे। उनका मत है कि प्रत्येक का वोट जैसे राजनीतिक प्रजातंत्र का निकश है, वैसे ही प्रत्येक का काम यह आर्थिक प्रजादण्ड का मापदण्ड है। प्रत्येक को काम के लिये अधिकार की व्याख्या करते हूये वे कहते है काम, प्रथम – तो जीविकोपार्जनीय हो तथा दूसरे, व्यक्ति को उसे चुनने की स्वतंत्रता हो। यदि काम के बदले में राष्ट्रीय आय का न्यायोचित भाग उसे नही मिलता हो तो उसके काम की गिनती बेगार में होगी। इस दृष्टि से न्यूनतम वेतन, न्यायोचित वितरण तथा किसी न किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था आवश्यक हो जाती है। दीनदयाल जी आगे कहते है – जैसे बेगार हमारी दृष्टि में काम नही है वैसे ही व्यक्ति के द्वारा काम में लगे रहते हुये भी अपनी शक्तिभर उत्पादन न कर सकना काम नही है। अण्डर इम्पलॉइमेण्ट भी इस प्रकार की बेकारी है। उपाध्याय जी उस अर्थव्यवस्था को अलोकतांत्रिक मानते है जो व्यक्ति के उत्पादन स्वातंत्र्य या सृजनकर्म पर आघात करती है अपने उत्पादन का स्वयं स्वामी न रहने वाला मजदूर या कर्मचारी अपनी स्वतंत्रता को ही बेचता है। आर्थिक स्वतंत्रता व राजनीतिक स्वतंत्रता परस्पर अन्योन्याश्रित है। राजनैतिक प्रजातंत्र बिना आर्थिक प्रजातंत्र के नही चल सकता। जो अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र है वही राजनीतिक दृष्टि से अपना मत स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त कर सकेगा। अर्थस्य पुरूषो दासः (पुरूष अर्थ का दास हो जाता है) मनुष्य के उत्पादन स्वांतंत्र्य पर सबसे बडा हमला पूँजीवादी औद्योगीकरण ने किया है। अतः उपाध्याय जी औद्योगिकरण का इस प्रकार से नियमन चाहते हैं कि जिससे वह स्वतंत्र लघु एवं कुटीर उद्योगों को समाप्त न कर सकें। आज जब हम सर्वागीण विकास का विचार करते हैं तो संरक्षण की आवश्यकता को स्वीकार करके चलते हैं। यह संरक्षण देश के उद्योगो से देना होगा। उपाध्याय जी यह महसूस करते हैं कि पश्चिमी औद्योगीकरण की नकल ने भारत के पारम्परिक उत्पादक को पीछे धकेला है तथा बिचौलियों को आगे बढ़ाया है। हमने पश्चिम की तकनीकी प्रक्रिया का आंख बंद करके अनुकरण किया है। हमारे उद्योग का स्वाभाविक विकास नही हो रहा। वे हमारी अर्थव्यवस्था के अभिन्न व अन्योन्याश्रित अंग नही अपितु ऊपर से लादे गए है।

—डॉ. महेश चंद्र शर्मा

ऐतिहासिक यात्रा का आरंभ

नोबल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी देश भर में बाल तस्करी और बाल यौन शोषण के खिलाफ लड़ाई का प्रसार करने के लिए ऐतिहासिक भारत यात्रा की शुरूआत करने जा रहे हैं। गत दिनों नई दिल्ली के इंडिया हैबीटेट सेंटर मे एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होनें बताया कि 35 दिन की यह यात्रा 22 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से होकर गुजरेगी, जिसमें 1,500 किलोमीटर का सफर तय किया जाएगा। दक्षिण में यात्रा की शुरूआत कन्याकुमारी से होगी और इसमें पूरे पश्चिम भारत को शामिल किया जाएगा । एसी तरह देश के पूर्वी हिस्से में यात्रा की शुरूआत गुवाहाटी से होगी, जबकि उत्तर भारत में श्रीनगर से इसकी शुरूआत होगी। यात्रा का समापन 15 अक्टूबर को राजधानी दिल्ली में होगा। पीड़ित बच्चों के माता–पिता के साथ भारत यात्रा की घोषणा करते हुए श्री सत्यार्थी ने कहा, आज मैं बाल यौन शोषण और तस्करी के खिलाफ युद्ध का ऐलान करता हुं, जो कि बच्चों के लिए भारत को फिर से सुरक्षित बनाने के लिए इतिहास का सबसे बड़ा आंदोलन है। मैं यह स्वीकार नही कर सकता कि हमारे बच्चों की बेगुनाही, मुस्कराहट और आजादी छिनती रहे या उनका बलात्कार किया जाता रहे। मुझे लगता है, यह साधारण अपराध नही है। यह एक नैतिक महामारी है जो हमारे देश को सता रही है। इसलिए इस महामारी को समाप्त करना ही होगा।

पृष्ठ क्रं. 1 का शेष भाग

विश्वविद्यालय संघ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद स्थापित करने के लिये प्रयत्नशील है जिसमें व्यक्तिवाद, वंशवाद और सामन्तवाद के लिये कोई स्थान नही है राहुल जी का आरोप भी थोपा है कि एक विचार धारा को थोपा जा रहा है। प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से बड़ा संघ का विरोधी कोई दूसरा नही हुआ लेकिन सन् 1962 में भारत पर चीन के आक्रमण के समय संघ और उसके नेताओं–कार्यकर्त्ताओं ने जिस भूमिका का निर्वाह किया उसके मद्देनजर उन्हें अपनी गलती महसूस हुयी और उन्होने 26 जनवरी 1963 गणतंत्र दिवस की परेड मूं सध को भी शामिल होने के लिये आमंत्रण भिजवाया। जय प्रकाश जी ने को भी शामिल होने के लिये आमंत्रण भिजवाया। जय प्रकाश जी ने भी अपने संपूर्ण क्रांति अभियान के लिये संघ का सहयोग मॉगा था। सन् 1971 के भारत–पाक के युद्ध के तत्कालवाद प्रधानमंत्री इंदिरा गॉधी ने संघ पर प्रतिबंध भी मांग कर रहे कॉग्रेसी कार्यकर्त्ताओं को दुत्कना और कहा था कि इन संघ के नेता और कार्यकर्त्ताओं ने युद्ध के दौरान रात भर गलियों,मोहल्लों में लाठिया बजा–बजा कर लोगों को जागृत रखा था। उस समय इंदिरा गॉधी ने सघ की राष्ट्रीय भूमिका के लिये भूरिभूरि प्रशंसा की थी। अतः राहुल जी आरोप लगायें लेकिन संदर्भो के लिये गहन अध्ययन भी करें। कॉग्रेस के आप बड़े नेता है, वजन दार बात कहिये तो जनता सुने और समझे संघ का स्वयंसेवक ही ऐसा सुझाव दे सकता है क्यों कि उसका विश्वास लोकतंत्र में है और मजबूत विपक्ष की भी चाह रखता है। मीडिया विशेषकर तथाकथित सेकुलर मीडिया से राहुलजी का प्रभावित होना अस्वाभाविक नही है, क्योकि कॉग्रेस के इस राजकुमार को जमीनी हकीकत से कोई दिलचस्पी है ही नही लेकिन इतना तो ध्यान में आता ही होगा कि मीडिया के माध्यम से इन दिनों भारतीयता और हिन्दूधर्म के प्रतीकों पर हमले लगातार बढ़ रहे हैं। राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान हो या राष्ट्रीय ध्वज, हर प्रतीक को लेकर इस मीडिया का रवैया नकारात्मक बना हुआ है। बहुसंख्यक, जनता क्या ऐसे रवैये से खुश होगी। आखिर वो कौन सी विचारधारा है जिसे थोपने का आरोप राहुल जी लगा रहे है ? जिन्हे इतिहास का ज्ञान है उन्हें मालूम है कि इस्लाम 1400 साल पहले अस्तित्व में आया था और दो हजार साल पहले ईसाईयत। सनातन धर्म तो लाखों साल पुराना है। यह भी स्मरण रखा जाना चाहिये कि जो व्यक्ति अपने इतिहास को जितने पीछे तक देख सकता है, वह अपने देश के भविष्य को उतने ही आगे तक सम्हाल सकता है।

संस्कृत के नमस् से बना नमाज

हजारों साल जनमानस से लेकर साहित्य की भाषा रही संस्कृत। कालांतर में करीब–करीब सुस्ता कर बैठ गई, जिसका एक मुख्य कारण इसे देवत्व का मुकुट पहनाकर पूजाघर में स्थापित कर दिया जाना था। भाषा को अपने शब्दों की चौकीदारी नहीं सुहाती। भाषा कॉपीराइट में विश्वास नहीं करती, वह तो समाज के ऑगन में बसती है। भाषा तो जिस संस्कृति और परिवेश में जाती है, उसे अपना कुछ न कुछ देकर ही आती है। **दजला और फरात के भूभाग से संस्कृत गुजरी तो उस स्थान का नामकरण ही कर दिया। हरे – भरे खुशहाल शहर को 'भगवान प्रदत्त' कह डाला। संस्कृत का भगः शब्द फारसी में बग हो गया और दत्त हो गया दाद और बन गया बगदाद।** इसी प्रकार संस्कृत का अश्वाक प्राकृत में बदला आवगन और फारसी में पलटकर अफगान हो गया और साथ में स्थान का प्रत्यय स्तान में बदलकर मिला दिया और बना दिया **हिंद का पड़ोसी अफगानिस्तान – यानी निपुण घुड़सवारों का निवास – स्थली।** स्थान ही नहीं, संस्कृत तो किसी के भी पूजाघरों में जाने से भी नही कतराती क्योंकि वह तो यह मानती है कि ईश्वर का एक नाम अक्षर भी तो है। अ–क्षर यानी जिसका क्षरण न होता हो। इस्लाम की पूजा पद्धाति का नाम यूँ तो कुरान में सलात है लेकिन मुसलमान इसे नमाज के नाम से जानते और अदा भी करते है। नमाज शब्द संस्कुत धातु नमस् से बना इसका पहला उपयोग ऋगवेद में हुआ है और अर्थ होता है– आदर और भक्ति में झुक जाना। गीता के इस श्लोक को देखें– **नमो नमस्तेस्तु सहस्त्रकृत्वः पुनश्व भूयोपि नमो नमस्ते। (11/36)** संस्कृत शब्द नमस् की यात्रा भारत से होती हुई ईरान पहुंची जहॉ प्राचीन फारसी अवेस्ता उसे नमाज पुकारने लगी और आखिरकार तुर्की, अजरबैजान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिजस्तान, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान,भारत,बांग्लादेश, बर्मा, इंडोनेशिया और मलेशिया के मुसलमानों के दिलों में घर कर गई। संस्कृत ने पछुवा हवा बनकर पश्चिम का ही रूख नही किया बल्कि यह पुरवाई बनकर भी बही। चीनियों को मौन शब्द देकर उनके अंतत को भी छू गई चीनी भाषा में ध्यानमग्र खामोशी को मौन कहा जाता है और स्पर्श को छू कहकर पुकारा जाता है।

धर्मेण हन्यते व्याधिः हन्यन्ते वै तथा ग्रहाः। धर्मेण हन्यते शत्रुः यतो धर्मस्तयो जयः

अर्थात् – धर्म से व्याधि दूर होती है, ग्रहों का हरण होता है, शत्रु का नाश होता है। जहाँ जर्म है, वहीं जय है।

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने - बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com